PAPER-III
PHILOSOPHY

Signature and Name of Invigilator

1. (Signature) __________________________
   (Name) ____________________________
2. (Signature) __________________________
   (Name) ____________________________

Roll No. | | | | | | | | |
(In figures as per admission card)

Roll No.________________________________
(In words)

D	0	3	1	1

Time : 2 $^1/_2$ hours] [Maximum Marks : **200**

Number of Pages in this Booklet : **32** Number of Questions in this Booklet : **19**

Instructions for the Candidates

1. Write your roll number in the space provided on the top of this page.
2. Answer to short answer/essay type questions are to be given in the space provided below each question or after the questions in the Test Booklet itself.
   No Additional Sheets are to be used.
3. At the commencement of examination, the question booklet will be given to you. In the first 5 minutes, you are requested to open the booklet and compulsorily examine it as below :
   (i) To have access to the Question Booklet, tear off the paper seal on the edge of this cover page. Do not accept a booklet without sticker-seal and do not accept an open booklet.
   (ii) **Tally the number of pages and number of questions in the booklet with the information printed on the cover page. Faulty booklets due to pages/questions missing or duplicate or not in serial order or any other discrepancy should be got replaced immediately by a correct booklet from the invigilator within the period of 5 minutes. Afterwards, neither the Question Booklet will be replaced nor any extra time will be given.**
4. Read instructions given inside carefully.
5. One page is attached for Rough Work at the end of the booklet before the Evaluation Sheet.
6. If you write your Name, Roll Number, Phone Number or put any mark on any part of the Answer Sheet, except for the space allotted for the relevant entries, which may disclose your identity, or use abusive language or employ any other unfair means, you will render yourself liable to disqualification.
7. You have to return the test booklet to the invigilators at the end of the examination compulsorily and must not carry it with you outside the Examination Hall.
8. **Use only Blue/Black Ball point pen.**
9. **Use of any calculator or log table etc., is prohibited.**

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

1. पहले पृष्ठ के ऊपर नियत स्थान पर अपना रोल नम्बर लिखिए ।
2. लघु प्रश्न तथा निबंध प्रकार के प्रश्नों के उत्तर, प्रत्येक प्रश्न के नीचे या प्रश्नों के बाद में दिये हुए रिक्त स्थान पर ही लिखिये ।
   इसके लिए कोई अतिरिक्त कागज का उपयोग नहीं करना है ।
3. परीक्षा प्रारम्भ होने पर, प्रश्न-पुस्तिका आपको दे दी जायेगी । पहले पाँच मिनट आपको प्रश्न-पुस्तिका खोलने तथा उसकी निम्नलिखित जाँच के लिए दिये जायेंगे, जिसकी जाँच आपको अवश्य करनी है :
   (i) प्रश्न-पुस्तिका खोलने के लिए उसके कवर पेज पर लगी कागज की सील को फाड़ लें । खुली हुई या बिना स्टीकर-सील की पुस्तिका स्वीकार न करें ।
   (ii) **कवर पृष्ठ पर छपे निर्देशानुसार प्रश्न-पुस्तिका के पृष्ठ तथा प्रश्नों की संख्या को अच्छी तरह चैक कर लें कि ये पूरे हैं । दोषपूर्ण पुस्तिका जिनमें पृष्ठ/प्रश्न कम हों या दुबारा आ गये हों या सीरियल में न हों अर्थात् किसी भी प्रकार की त्रुटिपूर्ण पुस्तिका स्वीकार न करें तथा उसी समय उसे लौटाकर उसके स्थान पर दूसरी सही प्रश्न-पुस्तिका ले लें । इसके लिए आपको पाँच मिनट दिये जायेंगे । उसके बाद न तो आपकी प्रश्न-पुस्तिका वापस ली जायेगी और न ही आपको अतिरिक्त समय दिया जायेगा ।**
4. अन्दर दिये गये निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें ।
5. उत्तर-पुस्तिका के अन्त में कच्चा काम (Rough Work) करने के लिए मूल्यांकन शीट से पहले एक पृष्ठ दिया हुआ है ।
6. यदि आप उत्तर-पुस्तिका पर नियत स्थान के अलावा अपना नाम, रोल नम्बर, फोन नम्बर या कोई भी ऐसा चिह्न जिससे आपकी पहचान हो सके, अंकित करते हैं अथवा अभद्र भाषा का प्रयोग करते हैं, या कोई अन्य अनुचित साधन का प्रयोग करते हैं, तो परीक्षा के लिये अयोग्य घोषित किये जा सकते हैं ।
7. आपको परीक्षा समाप्त होने पर उत्तर-पुस्तिका निरीक्षक महोदय को लौटाना आवश्यक है और इसे परीक्षा समाप्ति के बाद अपने साथ परीक्षा भवन से बाहर न लेकर जायें ।
8. **केवल नीले/काले बाल प्वाईंट पेन का ही इस्तेमाल करें ।**
9. **किसी भी प्रकार का संगणक (केलकुलेटर) या लॉग टेबल आदि का प्रयोग वर्जित है ।**

PHILOSOPHY
दर्शनशास्त्र

PAPER – III
प्रश्नपत्र – III

Note : This paper is of **two hundred (200)** marks containing **four (4)** sections. Candidates are required to attempt the questions contained in these sections according to the detailed instructions given therein.

नोट : यह प्रश्नपत्र **दो सौ** (200) अंकों का है एवं इसमें **चार** (4) खंड हैं । अभ्यर्थी को इनमें समाहित प्रश्नों के उत्तर अलग दिये गये विस्तृत निर्देशों के अनुसार दें ।

SECTION – I
खंड – I

Note : This section consists of **two** essay type questions of **twenty (20)** marks each, to be answered in about **five hundred (500)** words each. **(2 × 20 = 40 marks)**

नोट : इस खंड में **बीस–बीस (20)** अंकों के **दो** निबन्धात्मक प्रश्न हैं । प्रत्येक का उत्तर लगभग **पाँच सौ** (500) शब्दों में अपेक्षित है । **(2 × 20 = 40 अंक)**

1. Explain Hegelian dialectics.
हीगलवादी द्वन्द्वात्मक पद्धति की व्याख्या कीजिये ।

OR / अथवा

Bring out the differences between Pariṇāmavāda and Vivartavāda.
परिणामवाद और विवर्तवाद के बीच विभेदों पर प्रकाश डालिये ।

2. Explain the destiny of soul in Indian Philosophy.
भारतीय दर्शन में आत्मा के परमलक्ष्य को स्पष्ट कीजिए ।

OR / अथवा

Compare and contrast rationalism and empiricism.
बुद्धिवाद और अनुभववाद के बीच तुलना तथा अन्तर कीजिए ।

SECTION – II

खंड – II

Note : This section contains **three (3)** questions. From each of the electives/specializations, the candidate has to choose only one elective/specialization and answer all the **three** questions contained therein. Each question carries **fifteen (15)** marks and is to be answered in about **three hundred (300)** words.

(3 × 15 = 45 Marks)

नोट : इस खण्ड में प्रत्येक ऐच्छिक इकाई / विशेषज्ञता से **तीन** (3) प्रश्न हैं । अभ्यर्थी को केवल **एक** ऐच्छिक इकाई / विशेषज्ञता को चुनकर उसी के **तीनों** प्रश्नों का उत्तर देना है । प्रत्येक प्रश्न **पन्द्रह** (15) अंकों का है व उसका उत्तर लगभग **तीन सौ** (300) शब्दों में अपेक्षित है । **(3 × 15 = 45 अंक)**

Elective – I / विकल्प – I

3. How do Christianity and Islam conceive the relationship between God and man ? Discuss.
ईसाई धर्म तथा इस्लाम में परमेश्वर तथा मानव के बीच सम्बन्ध की धारणा क्या है ? विवेचना कीजिए ।

4. Discuss the main tenets of Sikhism.
सिक्ख धर्म के मुख्य सिद्धान्तों की विवेचना कीजिए ।

5. Discuss the concepts of Karma and rebirth according to Hinduism.
हिन्दू धर्म के अनुसार कर्म और पुनर्जन्म की अवधारणाओं की विवेचना कीजिए ।

Elective – II / विकल्प – II

3. Explain Frege's distinction between sense and reference.
अर्थ और निर्देश के बीच फ्रेगे के विभेद की व्याख्या कीजिए ।

4. Discuss Searle's view on speech acts.
वाक् क्रियाओं पर सर्ल के मत की विवेचना कीजिए ।

5. Give an account of Wittgenstein's view that the meaning of word is its use in language.
विटगेनस्टीन के मत कि 'शब्द का अर्थ भाषा में उसके प्रयोग में निहित होता है' का विवरण दीजिए ।

Elective – III / विकल्प – III

3. Explain the phenomenology of Perception.
प्रत्यक्ष ज्ञान के दृश्यप्रपंच विज्ञान की व्याख्या कीजिए ।

4. Discuss the problem of meaning in relation to the notion of life-world (Lebenswelt)
जीवन विश्व (लेबेन्सवेल्ट) की धारणा के सम्बन्ध में अर्थ की समस्या की विवेचना कीजिये ।

5. Discuss the conflict of interpretation and possibilities of agreement.
निर्वचन के संघर्ष तथा सहमति की संभाविताओं की विवेचना कीजिए ।

Elective – IV / विकल्प – IV

3. Explain Śaṅkara's arguments in favour of Nirguṇa Brahman.
निर्गुण ब्रह्म के पक्ष में शंकर की युक्तियों की व्याख्या कीजिए ।

4. How does Rāmānuja criticise Śaṅkara's doctrine of Māyā ?
शंकर के माया के सिद्धान्त की रामानुज ने किस प्रकार आलोचना की है ?

5. Discuss the nature and different conceptions of Bhakti as the means of liberation.
मुक्ति के साधन के रूप में भक्ति के स्वरूप तथा भिन्न अवधारणाओं की विवेचना कीजिए ।

Elective – V / विकल्प – V

3. Outline Gandhi's views on truth and non-violence.
सत्य और अहिंसा पर गांधीजी के विचारों की रूपरेखा प्रस्तुत करें ।

4. What is Sarvodaya ? Explain the salient features of Sarvodaya.
सर्वोदय क्या है ? सर्वोदय की मुख्य विशेषताओं की व्याक्या कीजिए ।

5. Explain Gandhain alternatives to Globalisation.
वैश्वीकरण के गांधीवादी विकल्पों की व्याख्या कीजिए ।

SECTION – III
खंड – III

Note : This section contains **nine (9)** questions of **ten (10)** marks each, each to be answered in about **fifty (50)** words. **(9 × 10 = 90 Marks)**

नोट : इस खंड में **दस-दस** (10-10) अंकों के **नौ** (9) प्रश्न हैं । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग **पचास** (50) शब्दों में अपेक्षित है । **(9 × 10 = 90 अंक)**

6. Bring out the distinction between nitya and anitya dravyās according to Vaiśeṣika.
वैशेषिक के अनुसार नित्य और अनित्य द्रव्य के बीच अन्तर बताइए ।

7. Discuss Hume’s notion of Self.
आत्मा के बारे में ह्यूम की धारणा की विवेचना कीजिए ।

8. What is Śabdapramāṇa ? Explain.
शब्द प्रमाण क्या है ? व्याख्या कीजिए ।

9. Briefly explain about scepticism.
संशयवाद के बारे में संक्षेप में व्याख्या कीजिए ।

10. What are the fallacies of inference according to Jainism ?
जैन मत के अनुसार अनुमान के हेत्वाभास क्या हैं ?

11. What are aśramadharmās ? Explain.
आश्रमधर्म क्या हैं ? स्पष्ट कीजिए ।

12. Establish the relationship between freedom and responsibility.
स्वतन्त्रता तथा उत्तरदायित्व के बीच सम्बन्ध स्थापित कीजिए ।

13. Discuss the structure of a categorical syllogism.
निरूपाधिक त्रिपदीयुक्ति की संरचना की विवेचना कीजिए ।

14. Bring out the distinction between argument and argument form with examples.
युक्ति तथा युक्ति रूप के बीच सोदाहरण अन्तर बताइए ।

SECTION – IV
खंड – IV

Note : This section contains **five (5)** questions of **five (5)** marks each based on the following passage. Each question should be answered in about **thirty (30)** words.

(5 × 5 = 25 Marks)

नोट : इस खंड में निम्नलिखित परिच्छेद पर आधारित **पाँच** (5) प्रश्न हैं । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग **तीस** (30) शब्दों में अपेक्षित है । प्रत्येक प्रश्न **पाँच** (5) अंकों का है । **(5 × 5 = 25 अंक)**

Dharma is the subject of inquiry in Mīmāṁsā. Jaimini defines dharma as a command or injunction which impels men to action. It is the supreme duty, the 'ought', the 'categorical imperative'. Artha and Kāma which deal with ordinary common morality are learnt by worldly intercourse. But Dharma and Mokṣa which deal with true spirituality are revealed only by the Veda. Dharma is supra-sensible and consists in the commands of the Veda. Action is the final import of the Veda which commands us to do certain acts and to refrain from doing certain other acts. The authoritativeness of the Veda is supported by social consciousness as well as by individual conscience. Dharma and adharma deal with happiness and pain to be enjoyed or suffered in the life beyond. Actions performed here produce an unseen potency (apūrva) in the soul of the agent which yields fruit when obstructions are removed and time becomes ripe for its fructification. The apūrva is the link between the act and its fruit. It is the causal potency (skakti) in the act which leads to its fructification. Actions are first divided into three kinds – obligatory (which must be performed, for their violation results in sin, though their performance leads to no merit); optional (which may or may not be performed; their performance leads to merit, though their non-performance does not lead to sin); and prohibited (which must not be performed, for their performance leads to sin, though their non-performance does not lead to merit). Obligatory actions are of two kinds – those which must be performed daily (nitya) like daily prayers (sandhyāvandana) etc., and those which must be performed on specified occasions (naimittika).

मीमांसा में धर्म अन्वेषण का विषय है । जैमिनी ने धर्म को आदेश/विधि वाक्य, जो व्यक्तियों को कार्य करने के लिये प्रेरित करता है, के रूप में परिभाषित किया है । यह सर्वोच्च कर्त्तव्य, 'करना चाहिये', 'निरपेक्ष आदेश है ।' अर्थ और काम, जो साधारण सर्वसामान्य नैतिकता के साथ सम्बन्ध रखते हैं, सांसारिक परस्पर व्यवहार द्वारा सीखे जाते हैं । धर्म और मोक्ष जो वास्तविक आध्यात्मिकता के साथ सम्बन्ध रखते हैं उनका ज्ञान सिर्फ वेदों से मिलता है । धर्म अनुभवातीत है तथा वेदों के आदेशों में निहित है । कर्म वेदों का अन्तिम आशय है जो हमें कुछ कर्म करने का आदेश देते हैं और कुछ अन्य कर्म करने से मना करते हैं । वेदों की आधिकारिता को सामाजिक चेतना तथा वैयक्तिक विवेक दोनों का समर्थन प्राप्त है । धर्म और अधर्म परलौकिक जीवन में भोगे जाने वाले सुख तथा कष्ट से सम्बन्ध रखते हैं । इस जीवन में किये गये कर्म कर्त्ता की आत्मा में अदृश्य शक्ति (अपूर्व) उत्पन्न करते हैं जो, जब प्रतिरोध समाप्त हो जाते हैं और उनके विपाक (फलन) का समय आ जाता है तो, फल देती है । अपूर्व, कर्म तथा उसके फल के बीच सम्बन्ध की कड़ी है । यह कर्म में कारणात्मक शक्ति है जो उसके फलन की ओर अग्रसर करती है । कर्मों को, पहले, तीन प्रकारों में विभाजित किया जाता है – नैतिक रूप से बाध्यकारी (जिन्हें करना ही चाहिये क्योंकि उनका उल्लंघन पाप में फलीभूत होता है, यद्यपि उनका निष्पादन किसी पुण्य की ओर प्रवृत नहीं करता है) ; ऐच्छिक (जो किये या नहीं किये जा सकते हैं, उन्हें

करने से पुण्य मिलता है, यद्यपि उन्हें नहीं करना पाप की ओर प्रवृत्त नहीं करता है); निषेधात्मक (जिन्हें कभी नहीं करना चाहिये, क्योंकि उन्हें करने से पाप लगता है, यद्यपि उन्हें न करने से पुण्य नहीं मिलता है) । नैतिक रूप से बाध्यकारी कर्म दो प्रकार के होते हैं – एक वह जिन्हें प्रतिदिन करना चाहिये (नित्य) जैसे कि दैनिक प्रार्थना (सन्धयावन्दना) इत्यादि, और वे जिन्हें विशिष्ट अवसरों पर ही करना चाहिये (नैमित्तिक) ।

15. Give Jaimini's definition of dharma.
धर्म के बारे में जैमिनी की परिभाषा दीजिये ।

16. What does the Veda command ?
वेद क्या आदेश देते हैं ?

17. What is <u>apūrva</u> ?
अपूर्व क्या है ?

18. What are the different types of actions ?
भिन्न प्रकार के कर्म क्या हैं ?

19. What are the kinds of obligatory actions ?
नैतिक रूप से बाध्यकारी कर्म के प्रकार क्या हैं ?

Space For Rough Work

FOR OFFICE USE ONLY	
Marks Obtained	
Question Number	Marks Obtained
1	
2	
3	
4	
5	
6	
7	
8	
9	
10	
11	
12	
13	
14	
15	
16	
17	
18	
19	

Total Marks Obtained (in words) ....

(in figures) ....

Signature & Name of the Coordinator ....

(Evaluation) Date ....